राज कॉमिक्स

संख्या 0003

इच्छाधारी सांप

राज कॉमिक्स है मेरा जनून

32

1986 2017

मनोरंजन का चौथा दशक!

RAJ COMICS Vintage

www.rajcomics.com

Vijay Kadam 89

इच्छाधारी शाप

कथानक: शिवराज चित्रांकन: त्रिशूल कॉमिको आर्ट, सम्पादन: प्रभिला जैन

I.C.P.F
01. fenzz

पापा, आप सांपों के विशेषज्ञ हैं- क्या इच्छाधारी सांप सचमुच होते हैं?

हां होते हैं, मगर लाखों में एक-करोड़ों तपस्या करने के बाद...!

क्या इच्छाधारी सांप मनचाहा रूप धारण कर सकता है?

कर सकता है।

लड़का-लड़की, शेर-चीता कोई भी रूप धारण कर सकता है?

हां बंटी बेटा, कोई भी रूप धारण कर सकता है।

मुझे इच्छाधारी सांप के बारे में कोई कहानी सुनाओ न पापा!

तुम कहानी सुनना चाहते हो तो सुनो- मगर बेटी मैं जो सुना रहा हूं वह केवल कहानी नहीं है - बल्कि हकीकत का मैं चश्मदीद गवाह हूं।

अच्छा पापा-फिर तो और भी मजा आयेगा।

तो सुनो बंटी - पाताल लोक में सांपों का एक देश है सर्पनगर - वहां का राजा था एक भयानक - कई सिरों वाला अजगर - जो बहुत बूढ़ा हो चुका था- इतना बूढ़ा कि वह ठीक से चल भी नहीं पाता था।

पापा! यह कहानी है या वास्तव में सच्चा किस्सा है?
देखो, बीच में नत बोलो- मैं कह चुका हूं कि यह सच्चा वाकया है - जिसका मैं खुद चश्मदीद गवाह हूं।
पापा ने कहानी शुरू कर दी।

पाताल लोक की अप्सरा नाम की नागिन इतनी सुन्दर थी कि युवराज जब्बार उस पर बुरी तरह मोहित था- वह उससे शादी करना चाहता था।

लेकिन "अप्सरा" पाताल लोक के जांबाज नाग तौसी से प्रेम करती थी।

उस समय तौसी और अप्सरा उस विशालकाय वृक्ष में प्रेम लीला में मग्न थे...
... जब युवराज जब्बार अपने सेनापति के साथ अचानक उधर से गुजरा।

... दृश्य देख कर जब्बार की आंखें जल उठीं।
मैं तौसी का खून पी जाऊंगा।

धीरज राखिये युवराज। कल नागपंचमी का दिन है ताजमहल में हमेशा की भांति तरह-तरह की प्रतियोगिताएं होंगी- आप उस प्रतियोगिता में अपनी राह के कांटे तौसी को खत्म कर डालिये।

ठीक है। कल तौसी रहेगा या अकबर रहेगा।
अगले दिन - भगवान शंकर की मूर्ति के सामने तौसी ने अपने गुरु के पैर छुए।
fenzz
मुझे आशीर्वाद दीजिये बाबा - सर्व देश के अंबाज और बहादुर नाग का खिताब मैं ही अर्जित करूं।
मेरा आशीर्वाद तेरे साथ है, मगर मुझे अकबर की मक्कारियों से डर लग रहा है।
अकबर मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता बाबा।
दुश्मन की शक्ति को कम नापना अक्लमंदी नहीं है - अकबर के दरीदे में सौ नागों जितना बल है।
तौसी हंस पड़ा।
केवल बल से क्या होता है - फुर्ती में वह मुझे छू भी नहीं सकता।
सावधान रहना बेटा।
राजमहल के एक बहुत बड़े मैदान में - राजा दीवानन के दरबार में खड़े सेनापति ने बुलन्द आवाज में कहा -
सर्व देश के नागरिकों। बीच मैदान में जो अलाव जल रहा है - वह सौ मीटर लम्बा है - जो नाग एक ही छलांग में उसे पार कर लेगा उसे सोने का ऐसा चमत्कारिक हड़ा दिया जायेगा - जिसका दूध कभी खत्म नहीं होता।

एक नाग ने कोशिश की। मगर वह दूसरे मीटर छलांग के बाद ही अलाव में गिर पड़ा और ...

... भस्म हो गया।

सबके चेहरे फक्क पड़ गये और दर्शक दीर्घा में सन्नाटा छा गया।

मैं अलाव को पार कर दूंगा

नहीं तौसी! जान जोखिम में मत डालो।

मुझे कुछ न होगा अप्सरा-तुलसी प्यार और बाबा का आशीर्वाद मेरे साथ है।

धप्प

तैयारियां शुरू हो गई और तौसी सांप में परिवर्तित हो गया और अलाव के चारों ओर रेंगने लगा।

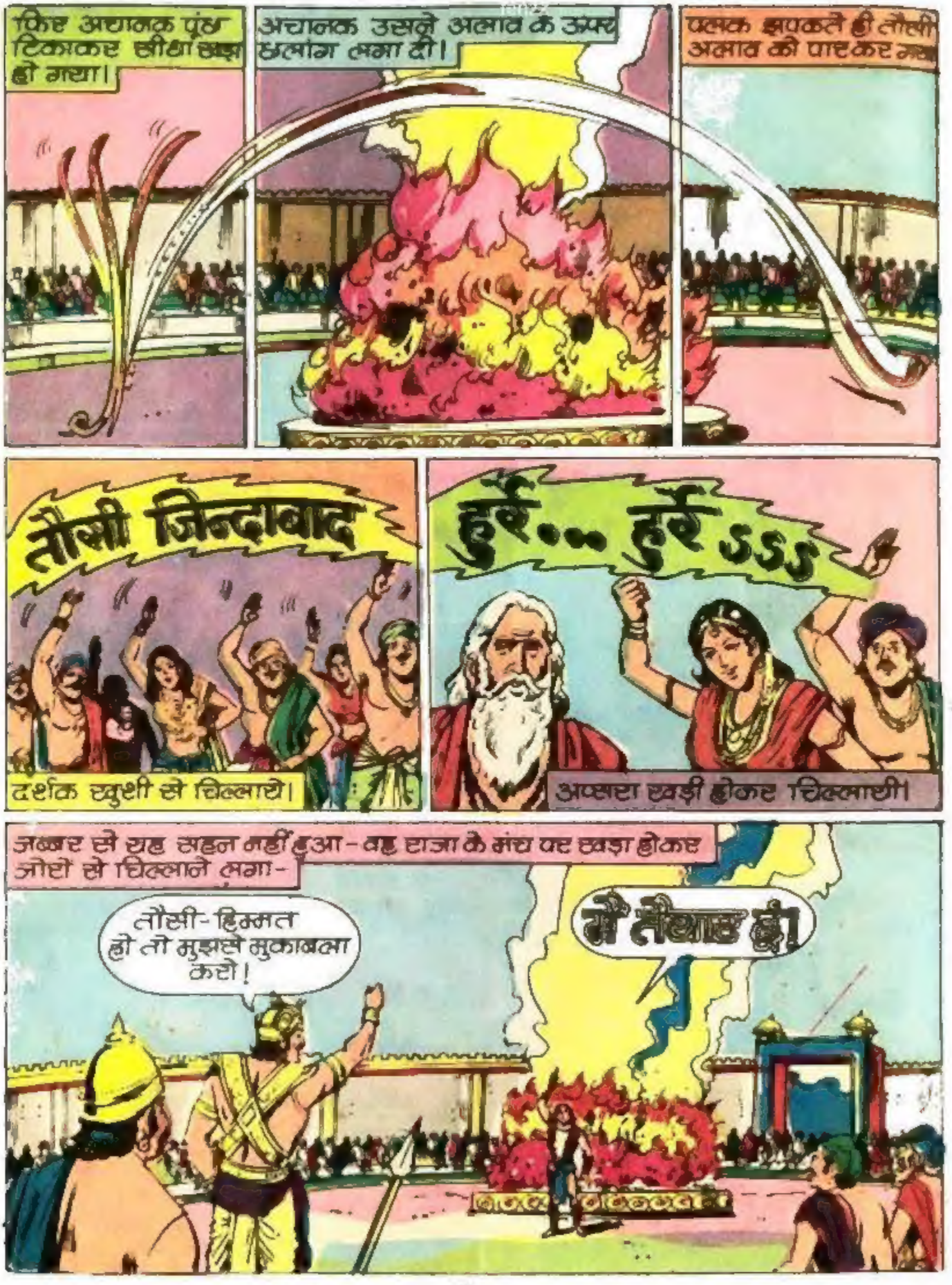
फिर अचानक पूंछ टिकाकर सीधा खड़ा हो गया।
अचानक उसने अलाव के ऊपर छलांग लगा दी।
पलक झपकते ही तौसी अलाव को पारकर गया
तौसी जिन्दाबाद
दर्शक खुशी से चिल्लाये।
हुर्रे... हुर्रे sss
अप्सरा खड़ी होकर चिल्लायी।
जब्बर से यह सहन नहीं हुआ - वह राजा के मंच पर खड़ा होकर जोरों से चिल्लाने लगा -
तौसी - हिम्मत हो तो मुझसे मुकाबला करो!
मैं तैयार हूं

राजा शंखनाद अनुशासन हीनता पर क्रोधित हो गये।
सेनापति! यह प्रतियोगिता बंद करो... यह प्रतियोगिता नहीं आपसी जंग होने जा रही है।
आप गलत न समझें महाराज! युवराज को अपनी ताकत पर भरोसा है ऐसा करना गलत नहीं होगा।
ठीक है सेनापति! युवराज जब्बर से प्रतियोगिता में नियमों को ध्यान में रखें।

प्रतियोगिता शुरू हुई - बीच में एक गेंद थी - जो प्रतियोगी उसे पहले हासिल करके - मुंह में दबा कर महाराज के पास ले जाता - वही जांबाज और बहादुर के खिताब से सम्मानित होता था।
बीच में गेंद थी- दोनों तरफ जब्बर व तौसी।
दोनों सांपों में तब्दील हुए।

तौसी ने फुर्ती से उछल कर गेंद मुंह में दबा ली। जब्बर उसके पीछे झपटा।
तौसी महाराज की ओर देखा तभी बीच में रास्ते में सेनापति ने एक तलवार फेंक दी।
टनांग

धोखा!

तौली बड़बड़ाते हुए फुर्ती से बचा।

तभी पीछे से आकर शक्तिशाली जब्बर तौली को अपनी कुंडली में कसने लगा

मैं आज तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूंगा

तौली की आंखों के समक्ष मौत का अंधेरा छा जाता है।

राजा शेखनाग दूर से चिल्लाये-

सेनापति! जब्बर को रोको।

नहीं! आज से आप हमारे महाराज नहीं- युवराज जब्बर हमारे महाराज हैं।

दो सैनिकों ने महाराज को घेर लिया।

दर्शक दीर्घा में शोर मच गया। अप्सरा भी चिल्लायी-

ऐ!

मेरे तौली को बचाओ...!

तभी वहां धुआं छाने लगा और देखते ही देखते घुप्प अंधेरा छा गया।

तीसरी रात जब होश आया तो वह शिव मन्दिर में नाग बाबा के सामने था।
बाबा - मैं जिन्दा हूं ? मैं कैसे बच गया ?
मैंने अपनी विद्या से अंतरध्यान करके तुम्हें बचा लिया। मगर मैं तुम्हारी अप्सरा को नहीं बचा पाया।
कहां है अप्सरा ? उसे क्या हो गया ?
जब्बर तथा सेनापति ने अप्सरा को कैद कर लिया।
नहीं बाबा - महाराज जैसे न्याय-प्रिय राजा के सामने यह अन्याय नहीं हो सकता।
तुम्हें दुःख होगा तीसरी - नीचे जब्बर ने अपने बूढ़े पिता को जेल में कैद कर लिया है।
मैं जब्बर को जीवित नहीं छोड़ूंगा बाबा।
तुम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते - इसके साथ राज्य की पूरी सेना है।
मुझे इसकी परवाह नहीं - मुझे यह बता दीजिये कि मेरी अप्सरा कहां कैद है ?
इन्द्रजाल तिलिस्म में - जो राजमहल के नीचे गहरे पानी में है ...
उस तिलिस्म को तोड़ना आसान काम नहीं बाबा।

तुमने ठीक अंदाजा लगाया- वहां बड़े-बड़े मगर मच्छ हैं - बड़ी-बड़ी व्हेल मछलियां हैं और उसके पानी की तलहटी में जो विशाल इमारत है- उसका हर कमरा तिलिस्म से बंधा है- जिसे तुम जैसा साधारण मानव कदापि नहीं तोड़ सकता।
बाबा। आपने एक बार कहा था कि इच्छाधारी सांप सब कुछ कर सकता है।
बेशक कर सकता है उसकी असाधारण शक्तियों के समक्ष किसी जहरीले सांप की तो बिसात क्या है- विलक्षण बुद्धि का मानव भी उसके सामने कुछ नहीं कर सकता।
बाबा- मैं इच्छाधारी सांप नहीं बन सकता।
नहीं बन सकते तौसी अभी तुम्हारी उम्र केवल अट्ठाइस-उन्नीस वर्ष है जबकि इच्छाधारी सांप वही बनता है- जो कम से कम एक हजार वर्ष की आयु को पार कर चुका हो।
मुझे बचपन में विद्या पढ़ाते समय आपने एक बार कहा था कि सांप अल्पायु में भी इच्छाधारी बन सकता है।
बेशक बन सकता है- मगर उसके लिए उसे कठोर तपस्या ही न करनी पड़ेगी- बल्कि उसमें मजबूत दृढ़-इच्छा-शक्ति का होना भी अनिवार्य है।
मेरे दिल में आग धधक रही है बाबा और वह आग है दुष्ट जब्बार को मिट्टी में मिलाने की- अप्सरा को पुनः पाने की।
लेकिन इतनी कठोर तपस्या...?
मैं करूंगा बाबा मैं करूंगा- आप केवल इतना बताइये कि मुझे क्या करना होगा?

तो सुनो - यहां से हजारों मील दूर दक्षिण में एक भयानक ज्वालामुखी है - उसके शीर्ष पर भगवान शंकर का एक मन्दिर है।
ज्वालामुखी पर मन्दिर ... बाबा ?

यही तो भगवान की लीला है वह मन्दिर ऐसी धातु का बना है - जिस पर आग का किंचित भी असर नहीं होता - कहते हैं - वह मन्दिर माता पार्वती ने बनवाया था।

सबसे पहला मुश्किल काम यह है कि तुम्हें उस ज्वालामुखी के पहाड़ को पार करना होगा और अगर तुम उसे पार करने में सफल हो गये तब...
तब तो मैं इच्छाधारी साप बन जाऊंगा बाबा।

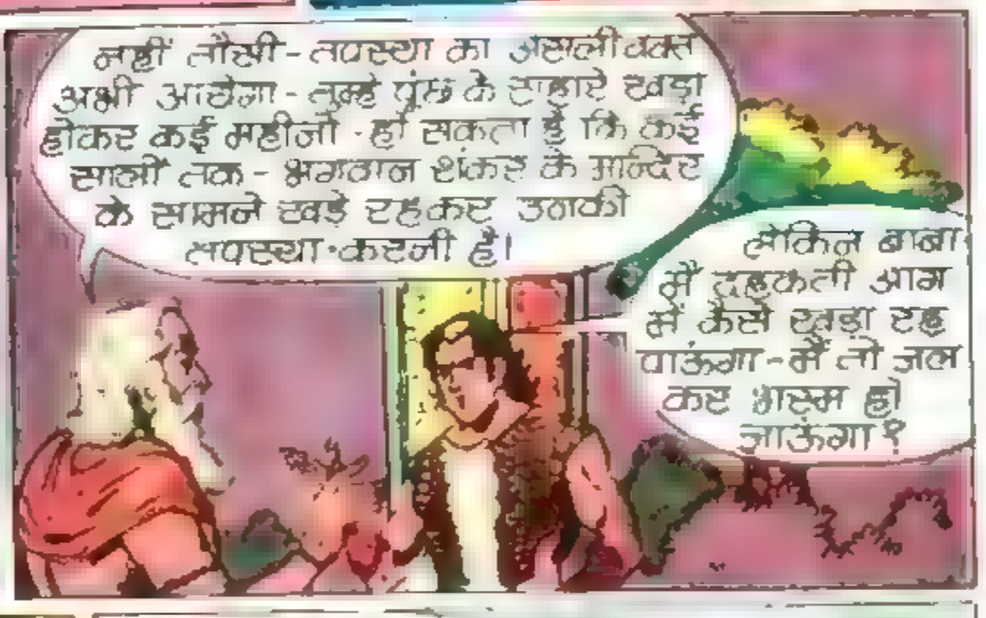
नहीं नौसी - तपस्या का असली वक्त अभी आयेगा - तुम्हें पूंछ के सहारे खड़ा होकर कई महीनों - हो सकता है कि कई सालों तक - भगवान शंकर के मन्दिर के सामने खड़े रहकर उनकी तपस्या करनी है।
लेकिन बाबा मैं दहकती आग में कैसे खड़ा रह पाऊंगा - मैं तो जल कर भस्म हो जाऊंगा ?

नहीं होगे नौसी - अगर तुमने पूंछ को ऊपर के शरीर को ज्वालामुखी के पर्वत पर टेकने की मूर्खता न की।
मैं समझा नहीं बाबा

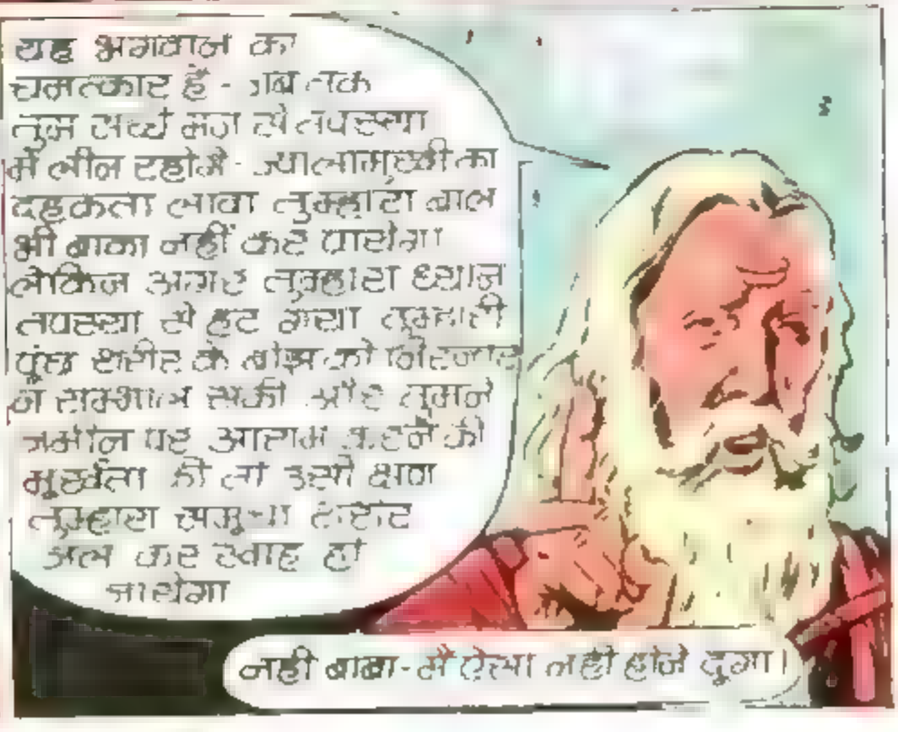
यह भगवान का चमत्कार है - जब तक तुम सच्चे मन से तपस्या में लीन रहोगे - ज्वालामुखी का दहकता लावा तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर पायेगा लेकिन अगर तुम्हारा ध्यान तपस्या से हट गया तुम्हारी पूंछ शरीर के बोझ को सम्हाल न सकी और तुमने जमीन पर आराम करने की मूर्खता की तो उसी क्षण तुम्हारा समूचा शरीर जल कर स्वाह हो जायेगा
नहीं बाबा - मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।

इच्छाधारी सांप बनना इतना आसान नहीं- तपस्या करते समय तुम्हारी पूंछ में इतनी गर्मी लगेगी- यह भी हो सकता है कि वह आग की लपटों से घिर जाये- लेकिन उन क्षणों में तुम्हें घबराना नहीं है- अगर तुम नहीं घबराये तो आग की लपटें तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेंगी और बाकी शरीर को जमीन पर डाल दिया तो तुम्हें कोई बचा नहीं पायेगा।
मुझे परवाह नहीं बाबा- अप्सरा के बिना तिल-तिल जल कर मरने से यह मौत बेहतर है।
भगवान तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करे बेटा।
आप दो रहे हैं बाबा?
नहीं बेटा मुझे अपने बहादुर बेटे पर नाज है।
तौसी चल पड़ा-
फिर वह अपनी मंजिल तक पहुंच ही गया।
यही ज्वालामुखी का पहाड़ है- मगर यहां मन्दिर तो कहीं दिखाई नहीं दे रहा?
यह दूर चोटी चमक रही है- जरूर शिव मन्दिर की होगी।
एक ही छलांग में उस मन्दिर तक पहुंचना असम्भव है।
मैं असम्भव को सम्भव बनाऊंगा।

तोसी राव में तबदील और पुल पर सीधा खड़ा हो गया।

उसने छलांग लगा दी।

बीच रास्ते में उसका शरीर लड़खड़ाया वह पुल के बल गिरा - पुल दहकते लावे में पड़ते ही वह चिल्लाया--

वह फिर छलांग लगाने लगा - और फिर चुंही तीसरी छलांग के बाद मन्दिर के बाहर पुंछ के बल खड़ा हो गया।

...और फिर वह तपस्या में लीन हो गया।

अचानक बहुत तेज आंधी शुरू हो गई।

ओंऽऽऽ

ओंऽऽऽ

आंधी तपस्या भंग न कर सकी। तब घनघोर बारिश शुरू हो गयी।

तोसी के शरीर से असंख्यों बार केंचुलियां उतरने लगीं।

पूंछ और उसका शरीर अग्नि की लपटों से जलने लगा।

फिर कई महीनों के बाद एक दिन घड़-घड़ की आवाज हुई और भगवान की आवाज गूंजी-

घड़-घड़

हम तुमसे प्रसन्न हैं तौसी।

भ-भगवन आप ?

तुम्हारी पूंछ जल चुकी है उसे नये शरीर की आवश्यकता है- क्यों तौसी- यह चाहते हो न ?

आप तो सर्वज्ञानी हैं भगवन।

भगवान शंकर की हथेली में एक रत्न चमक उठा - जिसकी किरणें चारों ओर फैल रही थीं।

तुम्हारी तपस्या पूर्ण हुई- हमारे नजदीक आकर यह रत्न प्राप्त करो...?

म में इच्छाधारी सांप बन गया भगवन।

जो रूप चाहो वही आकार धारण कर सकते हो तुम - लेकिन ध्यान रहे - हमारा यह आशीर्वाद तभी तक तुम्हारे साथ होगा - जब तक तुम सच्चाई के साथ रहोगे।

तभी अपने बड़ा - जैसे ही भगवान शंकर ने उसे रत्न दिया - वह अचानक बेहोश हो गया।

आंखे खुली तो वह समुद्र के किनारे था और उसकी हथेली में रत्न जगमगा रहा था।

कहीं यह मेरा सपना तो नहीं था।

ऐसा क्यों न करूं - एक बार किसी रूप के धारण करने के बारे में सोच कर भगवान शंकर के वरदान की परीक्षा लूं...?

सबसे पहले मैं अपनी अप्सरा का रूप धारण करूंगा।

और अगले क्षण वह "अप्सरा" के रूप में था

उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

उसी शाम - बाबा मंदिर में भगवान शंकर की मूर्ति के सामने समाधि में लीन थे कि अप्सरा वहां पहुंची

बाबा बाबा - आंखें खोलो बाबा अभिशप्त जीवन की कैद से अप्सरा आजाद होकर आपके पास पहुंच गई है।

बाबा ने आंखे खोली -

तू आजाद हो गई अप्सरा ?

हां बाबा

बाबा अचानक चौंके और फिर मुस्कराने लगे।
तू बाबा को धोखा देना चाहता है तौसी?
क - क्या मतलब?
इच्छाधारी सांप के परिवर्तित रूप से एक विशेष गंध निकलती है - और बाबा उस गंध को अच्छी तरह सूंघ सकता है।
आप सचमुच महान हैं बाबा।
तौसी बाबा के पैरों में गिर पड़ा...
... और वास्तविक रूप में आ गया।
उठो तौसी! तुम्हारी दृढ इच्छा शक्ति और अटूट तपस्या के सामने तुम्हारा यह गुरु आज नतमस्तक होता है।
मुझे इन्द्रजाल तिलिस्म के बारे में विस्तार-पूर्वक बताइये बाबा - जिसमें जम्बर ने मेरी अप्सरा को कैद कर रखा है।
मैं जानता हूं अब तुम नहीं रुकोगे - इसलिये सुनो - इन्द्रजाल तिलिस्म में दाखिल होने के दो रास्ते हैं - पहला रास्ता - राजमहल के अन्दर से जाता है - जिसकी मुझे विस्तृत जानकारी नहीं है - लेकिन दूसरा रास्ता राजमहल के पीछे से बहने वाली नदी से जाता है।

तुम्हें इसी रास्ते से जाना होगा- नदी की तलहटी की जमीन में घंसी मोहे की एक बड़ी बल्लम है...इसके ठीक उत्तर दिशा में तुम्हें एकदम नदी में जाना होगा- यह रास्ता बेहद जोखिम भरा है - बड़ी-बड़ी खूंखार मछलियां - मगरमच्छ- हजारों पानी के जानवर अपना जबाड़ा खोले तुम्हें निगलने की प्रतीक्षा में तैयार मिलेंगे।
उसके बाद बाबा ...?
अगर तुमने यह खतरनाक रास्ता पार कर लिया। तब तुम एक सुरंग में पहुंच जाओगे- इस सुरंग से निकलने के बाद तुम पानी विहीन धरातल पर होगे- वहीं एक विशाल बरगद का वृक्ष होगा और उस वृक्ष के चबूतरे पर तुम्हारा स्वागत करेगा इन्द्र नाम का एक बेहद बूढ़ा- मगर बेहद चालाक और बुद्धिमान सांप।
इन्द्र नाम है उस सांप का...?
हां बेटा- यही इन्द्र इस तिलिस्म के द्वार का प्रहरी भी है और रक्षक भी- वह अपने जीते जी- राजघराने के अतिरिक्त किसी अन्य अपरिचित को तिलिस्म में हरगिज दाखिल न होने देगा।
मैं उसको निबट लूंगा।
जोश में काम लोगे - तब यह तिलिस्म तुम्हारी समाधि बन कर रह जायेगा - इन्द्र बेहद शक्तिशाली है - उसके दांत में हजारों नाग जितना जहर है।

तौसी जोड़ में आ गया।
मुझे किसी की परवाह नहीं- आप मुझे ट्रिलिस्म के बारे में बताइये।
उस बरगद की जड़ में ही वह रास्ता है- जो ट्रिलिस्म के उस भाग तक पहुंचता है - जहां चारों ओर सौ से ऊपर कमरे बने हुए हैं।
fenzz
मेरी जरूरत कौन से कमरे में कैद है ?
यह तो मैं नहीं जानता- लेकिन मेरा दिल यह इशारा मुझे कर रहा है कि वह यहां किसी एक कमरे में कैद है।

मुझे आशीर्वाद दो बाबा...!
भगवान तेरे पवित्र प्रेम को सफल बनाये।

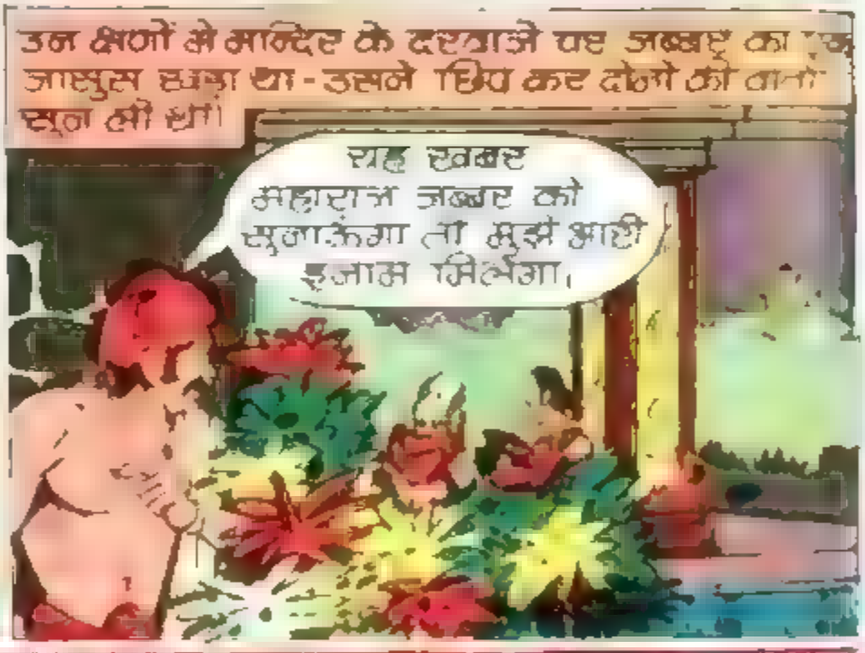
उन क्षणों में मन्दिर के दरवाजे पर जब्बर का एक जासूस खड़ा था - उसने छिप कर दोनों की बातें सुन ली थीं।
यह खबर महाराज जब्बर को सुनाऊंगा तो मुझे अच्छी इनाम मिलेगा।

उधर तौसी ने राजमहल के पीछे बहती नदी में छलांग लगाई।
छपाक

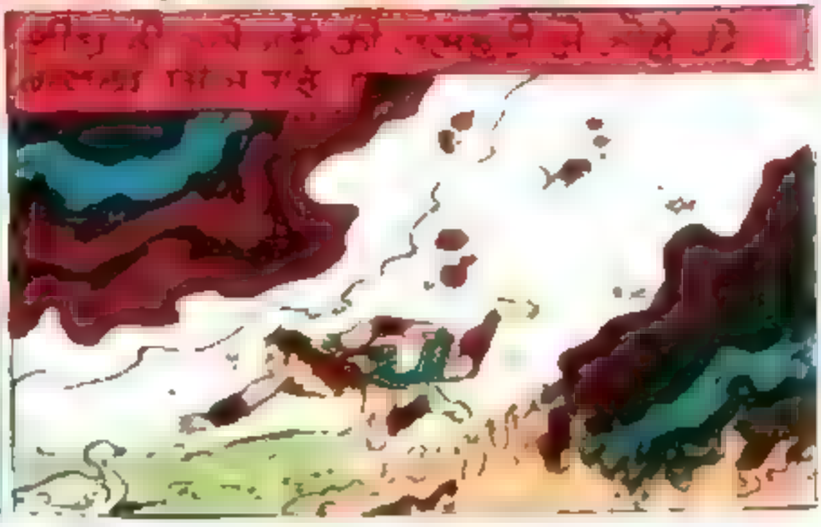

वह उत्तर दिशा में भटा - तभी उसका सामना मगरमच्छ से हुआ।

मगरमच्छ ने उसे घायल कर दिया।

उसने गुस्से में अपने शरीर को छोटा कर लिया और मगरमच्छ के खुले जबाड़े में घुस गया।

मगरमच्छ के पेट में घुस कर
ने अपना शरीर इतना
किया कि ...

...

रास्ते में उसका मुकाबला एक मछली से भी हुआ- लेकिन उसे भी पूरनो तरकीब से खत्म करके तौसी सुरंग तक पहुंच गया।
सुरंग से निकलते ही उसे बरगद का वृक्ष दिखाई दिया- जहां इन्द्र नामक माली आराम से बैठा था।
तौसी ने कुछ सोच कर अजगर का रूप धारण कर लिया।
महाराज आप...?
हां- हमने सोचा कि आज दूसरे रास्ते से तिलिस्म में दाखिल होकर देखेंगे।
यह आपने अच्छा नहीं किया महाराज - इस रास्ते में बड़े-बड़े मगरमच्छ और जाने कितने भयानक जानवर हैं।
अजगर को किसी का भय नहीं- अच्छा देर मत करो रास्ते से हटो और हमें तिलिस्म में दाखिल होने दो।
जैसी आज्ञा महाराज!

लोसी की आंखें चमक उठीं- मगर अचानक इन्द्र को ठिठकते देख कर वह चौंक पड़ा।
तुम देव कुल के राजघराने का अपमान कर रहे हो?
जी नहीं- मैंने राजघराने का दूध पिया है- मैं उसी की रक्षा कर रहा हूं।
तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है इन्द्र...?
इन्द्र के शरीर की केंचुली हजारों बार बदली है और ये केंचुली इसलिए नहीं बदली कि मुझे कोई बीमारी है... बल्कि इन बदलती केंचुलियों ने जमाने के बदलते हजारों रंगों को अपनी आंखों से देखा है और ये आंखें साफ देख रही हैं....
क्या बकवास कर रहे हो तुम?
ये आंखें साफ देख रही हैं उस इच्छाधारी सांप को- जो मेरे महाराज का रूप धारण करके मुझे धोखा देने के लिए आया है।
तुम्हें धोखा हो रहा है इन्द्र - हम इच्छाधारी सांप नहीं- बल्कि वास्तव में तुम्हारे महाराज जख्मर हैं।
अच्छा- तो इस आईने में अपनी सूरत देखिये।
बरगद के पेड़ के चबूतरे पर रखे आईने को देख लोसी अवाक रह गया- उस आईने में एक सांप का अक्स उभर रहा था।

इन्द्र ने ठहाका लगाया—

हा-हा-हा...
यह आईना मैंने दूर दृष्टि के हिसाब से तुम जैसे इच्छाधारी साप के लिए ही इस्तु छोड़ा था- जिससे मैं पहचान कर सकू कि आने वाला कोई छद्मधारी तो नहीं है।

स-लेकिन इसमें मेरी शक्ल...?

हा-हा-हा तुम तपस्या से इच्छाधारी सांप अवश्य बन गये- लेकिन तजुर्बे से पकी अक्ल तुम्हारे पास नहीं है- वरना तुम यह रहस्य अवश्य जानते होते कि जब कभी कोई इच्छाधारी सांप- किसी आईने के सामने आता है- तब उसकी छदम भेष वाली सूरत नहीं- बल्कि असली सूरत आईने में दिखाई पड़ती है।

ले सम्भल जा इन्द्र- जालिम राजा का साथ देने के अपराध के कारण तू आज मेरे हाथों से बच नहीं सकेगा।

इन्द्र ने तुरन्त सांप का रूप अख्तियार कर लिया।

लौकी सांप बन कर इन्द्र पर झपट पड़ा।

हिस्श-हिस्श

फुंकार

दोनों में भयानक जंग शुरू हो गई।

इन्द्र भारी पड़ने लगा।

अचानक तेजी से लपके का
इन्द्र ने झपटा कर लिया।
इन्द्र दर्द से चिल्लाया-
यह धोखा है!
धोखेबाजों के
साथ धोखे से ही काम
लेना पड़ता है।
और फिर लपकने में इन्द्र के पंजे को अपने
मुंह में दबा लिया। इन्द्र तड़प उठा-
हाय!
इसी इन्द्र ने अपनी पूंछ से बन्दर के
एक दस्ती हाथ दी।
इन्द्र अत्यधिक स्थिति में आर्तनाद कर
उठा।
आssssह...!
कहते हैं खाप के
दिन नहीं होता - अगर
होता तो मेरा दिन आज
तुम्हारे साथ हमदर्दी
खेद होता...!
मर्ग से पूर्व
शायद तुझे
सदबुद्धि
आ गयी
है।
हे, हा-हा!
जाओ।
भाग जाओ।

नहीं- नहीं- मेरा अन्त समय आ पहुंचा है। मैंने यह रस्सी खींच कर घण्टी बजा दी है।
इससे कोई तूफान आ जायेगा
बहुत बड़ा तूफान आ जायेगा - तुम देख लेना- कुछ ही देर बाद इस तिलिस्म की लम्बी-चौड़ी इमारत विस्फोटक पदार्थ से उड़ जायेगी खण्डहर हो जायेगी- इस तिलिस्म में उस समय जो भी उपस्थित होगा- वह टूटती इमारत के नीचे दब कर मर जायेगा।
fenzz
नहीं- ऐसा नहीं हो सकता तिलिस्म में मेरी अप्सरा बंदी है - उसका बाल भी बांका नहीं हो सकता
वह सर्प बन कर वृक्ष की जड़ में घुसने लगा।
रुक जाओ! तुम अप्सरा के साथ अपनी जान भी जोखिम में डाल रहे हो।
मुझे परवाह नहीं!
उधर राज महल में जासूस ने जैसे ही महाराज जब्बर को खबर दी- वह क्रोध में आग बबूला हो उठा।
तुम बकवास कर रहे हो- तौसी का इच्छाधारी सांप बनना नामुमकिन बात है।
मेरा यकीन करें महाराज- वह इच्छाधारी सांप 'अप्सरा' को छुड़ाने के लिए इन्द्र-जाल तिलिस्म में दाखिल होने गया है।

तभी महल में घण्टी बजने लगी।
दनननननन
ऐसा नहीं हो सकता।
महाराज! यह तो अनर्थ हो गया इस घंटी के बजने का एक ही अर्थ है- दुश्मन सिलिस्म को तोड़ चुका है और वहां दाखिल हो चुका है।
चीखता-चिल्लाता जब्बर कक्ष से बाहर की ओर दौड़ा-
सिलिस्म को सिचारित करने वाले कक्ष में वह दाखिल हुआ।
इस जन्म में जो चीज जब्बर को हासिल नहीं हो सकती-वह उसके दुश्मन को भी हासिल नहीं होगी।
यह आप क्या कर रहे हैं महाराज?
अप्सरा अमर मेरी नहीं बन सकती तब तोसी की भी नहीं बनेगी।
जान से मार डालूंगा दोनों को...!
हा-हा-हा!
अब दोनों में से कोई जीवित नहीं रहेगा।
खSSSSट

अचानक ओलों की आवाज़ गूंजने लगी - धड़ाम धड़ाम धड़ाम!

धड़ाम

धड़ाम

धड़ाम

उधर इन्द्र जाल लिमिटेड के बाग में खड़ा तौसी पुकार रहा था।

अप्सरा अप्सरा ऽ ऽ ऽ

प्रत्युत्तर में अप्सरा की आवाज़ गूंज उठी-

तौसी! मेरे प्यारे तौसी - मैं यहां हूं!

तौसी आवाज की दिशा की ओर दौड़ा।

एक कमरे की खिड़की पर उसे अप्सरा की झलक दिखाई दी।
अरे! खिड़की पर तो वह जादुई लता है।
तुम कैसे हो तौसी?
तुम चिन्ता मत करो अप्सरा यह कमीना जल्लाद तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।
मैंने कई दिनों से दूध की एक बूंद तक नहीं चखी - उस दुष्ट ने तुम्हारी अप्सरा पर कितने जुल्म ढाये हैं - अगर मैं तुम्हें बताऊंगी तो तुम्हारी रूह कांप जायेगी।
उस नीच के दरिंदे के मैंने टुकड़े-टुकड़े न किये तो मेरा नाम तौसी नहीं...।
मेरा दम घुटा जा रहा है - मुझे कैद से बाहर निकालो तौसी...।
एक मिनट ठहरो मैं इस जाली का इन्तजाम करता हूं।
भड़ाक
उसने जाली पर घूसा मारा तो जाली टूट कर बिखर गई।
भी-
धड़ाम-धड़ाम-धड़ाम
बचाओ!
छत गिरने लगी।
तभी कमरे की छत गिर पड़ी और अप्सरा एक पत्थर के नीचे दब गई।

तोसी उछल कर दहते हुए कमरे में दाखिल हुआ।
मैं आ रहा हूं अप्सरा...
पत्थरों को हटा कर उसने अप्सरा को निकाला।
होश में आओ अप्सरा... भगवान शंकर की कसम - मुझे तुम्हारी सौगन्ध - अगर तुम्हें कुछ हो गया - तो मैं पूरे सर्प देश को आग लगा दूंगा - जब्बर को जिन्दा जमीन में गाड़ दूंगा...!
धड़ाम
धड़ाम
वह अप्सरा को कंधे पर लाद कर भागा।
धड़ाम धड़ाम धड़ाम
छपाक
उसने फिर नदी में छलांग लगा दी।

उस समय - सारे देश में चारों तरफ मौत का नजारा था।
बस्ती धू-धू करके जल उठीं।
राजमहल आग की लपटों में-
आग लपटों से घिरे चिल्ला रहे थे।
उस समय तौसी पागलों की हालत में हाथ में जलती मशाल लेकर एक झोंपड़ी में आग लगा रहा था कि बाबा पहुंच गये-
तुम पागल हो गये हो तौसी?
तुमको दूर हट जाओ बाबा- मैं पूरी दुनिया में आग लगा दूंगा।
क्यों लगा दोगे आग? पूरी दुनिया ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?

यह मेरी अप्सरा की लाश है - मेरी अप्सरा मर चुकी है बाबा।

चीखो मत! एक अप्सरा अगर मर गई तो क्या भगवान की बनाई इस दुनिया को जला कर राख कर दोगे?
मेरे सामने से हट जाइये बाबा - मेरे सर पर खून सवार है - अब मैं जा रहा हूं - जब्बर को तलाश करने मुझे उसका खून पीना है।

तुम कहीं नहीं जाओगे - तुम अपने होश में नहीं हो।

fenzz
हां - हां - मैं होश में नहीं हूं - और तब तक होश में नहीं आऊंगा - जब तक इस सर्प देश की धरती को सबके खून से लाल न कर दूं - जहां मेरी मासूम अप्सरा का खून टपका था!

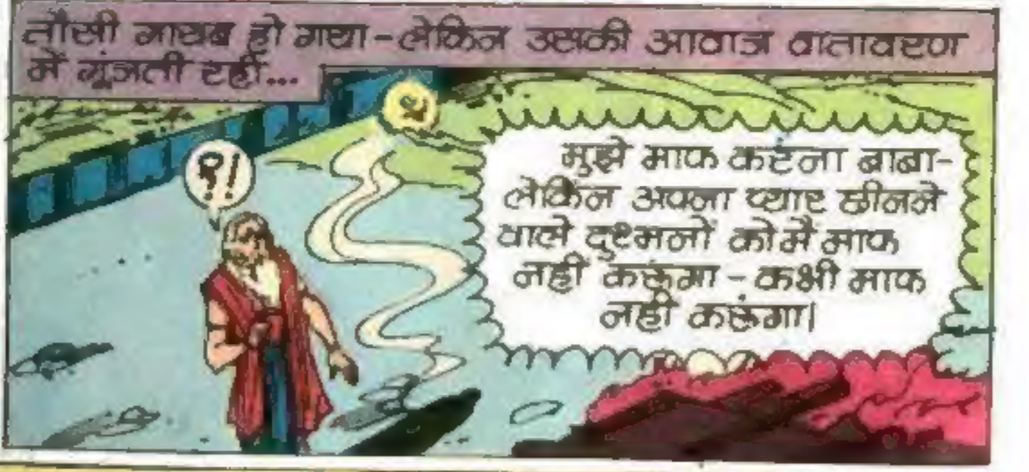

तौसी ने अजगर से कैसे बदला लिया ? उसकी अप्सरा मर चुकी थी या वास्तव में जिन्दा थी ? बच्चों यह जानने के लिए तुम्हें अपने प्यारे अंकिल टिंकुदाज का आगामी कॉमिक्स

इच्छाधारी सांप का इंतकाम

पढ़ना होगा। यह ध्यान रहे इच्छाधारी सांप का इंतकाम तुलसी कॉमिक्स और केवल तुलसी कॉमिक्स से ही प्रकाशित होगा।

fenzz
01.1.C.P.F